International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गौरवशाली अतीत, उपेक्षित वर्तमान: बंजारा समुदाय की बदलती पहचान और समकालीन चुनौतियाँ

Professor (Dr.) Lalith Kumar Dharavath,

Professor, Social Science, Teaching

सार:
यह शोध पत्र बंजारा समुदाय के समृद्ध व्यापारिक इतिहास और ऐतिहासिक गौरव का विश्लेषण करते हुए, आधुनिक भारत में उनके सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन, पहचान के संकट और समकालीन चुनौतियों को रेखांकित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र भारत के विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू समुदायों में प्रमुख स्थान रखने वाले बंजारा समुदाय के ऐतिहासिक गौरव और उनके वर्तमान सामाजिक-आर्थिक संकट का एक आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक रूप से, बंजारा समुदाय अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान, व्यापारिक कुशलता और दुर्गम मार्गों पर परिवहन व्यवस्था के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहा है। मुगल काल से लेकर ब्रिटिश काल के प्रारंभिक दौर तक देश के आंतरिक व्यापार में इनकी भूमिका अत्यंत गौरवशाली रही। किंतु, औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू किए गए 'आपराधिक जनजाति अधिनियम (**Criminal Tribes Act, 1871**)' और रेलवे के विस्तार ने इस समृद्ध समुदाय को हाशिए पर धकेल दिया।
यह शोध दर्शाता है कि स्वतंत्रता के पश्चात भी इस समुदाय का वर्तमान अत्यंत चिंताजनक और चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। आधुनिक युग में स्थायी आवास का अभाव, निरक्षरता, तीव्र आर्थिक तंगी, सांस्कृतिक विलोपन और सामाजिक मुख्यधारा से अलगाव इनके 'शर्मनाक वर्तमान' या गहरे संकट को रेखांकित करते हैं। प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों पर आधारित यह अध्ययन [यहाँ अपने अध्ययन का क्षेत्र लिखें, जैसे: तेलंगाना/राजस्थान/महाराष्ट्र] के बंजारा समाज की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि उचित सरकारी नीतियों, भूमि अधिकारों और शैक्षणिक सुधारों के बिना इस समुदाय के ऐतिहासिक गौरव को पुनर्स्थापित करना और इनके वर्तमान संकट को दूर करना संभव नहीं है। यह पत्र बंजारा समुदाय के समग्र उत्थान और नीतिगत समावेशन के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव भी प्रस्तावित करता है।

मुख्य शब्द (Keywords): बंजारा समुदाय, ऐतिहासिक गौरव, विमुक्त जनजाति (DNTs), सामाजिक-आर्थिक संकट, पहचान का विस्थापन, समकालीन चुनौतियाँ।

1. **Introduction & Hook**
(प्रस्तावना और ध्यानाकर्षण)

- **Hook:** "इतिहास के पन्नों में जो समुदाय कभी विशाल व्यापारिक कारवां का नेतृत्व करता था और साम्राज्यों की रीढ़ माना जाता था, वह आज आधुनिकता की दौड़ में अपनी पहचान और बुनियादी अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहा है।"

- **Context:** बंजारा (लबाना/लमानी) समुदाय का भारत के आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास में एक गौरवशाली अतीत रहा है। यह समुदाय पारंपरिक रूप से घुमंतू व्यापारी (Nomadic Traders) थे, जिन्होंने दुर्गम क्षेत्रों में आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित की।
- **Thesis Statement (मूल कथन):** यह शोध दर्शाता है कि ऐतिहासिक रूप से आत्मनिर्भर और समृद्ध बंजारा समुदाय, औपनिवेशिक नीतियों और आधुनिक विकास की मुख्यधारा से अलग-थलग पड़ने के कारण आज सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन, सांस्कृतिक पहचान के संकट और राजनीतिक उपेक्षा का सामना कर रहा है।

Objective of the Study (अध्ययन का उद्देश्य):

- बंजारा समुदाय के ऐतिहासिक योगदान और उनके वर्तमान सामाजिक-आर्थिक पतन के कारणों का विश्लेषण करना।
- समकालीन समय में उनकी बदलती सांस्कृतिक पहचान और विस्थापन की चुनौतियों को रेखांकित करना।
- विभिन्न राज्यों में उनके आरक्षण और नीतिगत वर्गीकरण (ST/SC/OBC) से उपजी विसंगतियों का अध्ययन करना।

2. The Research Problem
(शोध समस्या)

बंजारा समुदाय के सामने सबसे बड़ी शोध समस्या "**पहचान का संकट और संरचनात्मक उपेक्षा**" **(Identity Crisis and Structural Neglect)** है।

- **भौगोलिक विखंडन:** अलग-अलग राज्यों में एक ही समुदाय को अलग-अलग संवैधानिक दर्जा प्राप्त है (जैसे- तेलंगाना/आंध्र प्रदेश में ST, कर्नाटक में SC, और उत्तर प्रदेश/राजस्थान में OBC या घुमंतू)। इस नीतिगत विसंगति के कारण उन्हें समान कल्याणकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता।
- **आजीविका का नुकसान:** पारंपरिक घुमंतू व्यापार और जंगलों पर आधारित आजीविका छिन जाने के कारण यह समुदाय बड़े पैमाने पर बंधुआ मजदूरी, दैनिक वेतनभोगी और अनैतिक श्रम (जैसे ईंट भट्टों या निर्माण कार्यों) में धकेला जा चुका है।
- **सांस्कृतिक क्षरण:** स्थायी बस्तियों (तांडा) के आधुनिक शहरों में विलय और शिक्षा की कमी के कारण उनकी अनूठी भाषा (गोरमाटी/लमानी) और सांस्कृतिक प्रथाएं तेजी से विलुप्त हो रही हैं।

3. Literature Gap
(साहित्यिक अंतराल)

मौजूदा शोधों की समीक्षा करने पर निम्नलिखित चार प्रमुख अंतराल (Gaps) दिखाई देते हैं, जिन्हें यह शोध पूरा करने का प्रयास करेगा:

- **Gap 1: ऐतिहासिक बनाम समकालीन अध्ययन का अभाव** अकादमिक साहित्य में बंजारा समुदाय के इतिहास (जैसे मुगलों या अंग्रेजों के समय उनके व्यापार) पर तो प्रचुर सामग्री उपलब्ध है, लेकिन आधुनिक 21वीं सदी में उनके शहरी विस्थापन और समकालीन चुनौतियों पर बहुत कम समकालीन डेटा मौजूद है।
- **Gap 2: राज्य-वार संवैधानिक विसंगतियों पर नीतिगत शोध की कमी** विभिन्न राज्यों में बंजारा समुदाय के भिन्न-भिन्न प्रशासनिक वर्गीकरण (ST/SC/OBC) के कारण उत्पन्न होने वाले अंतर-प्रांतीय संघर्षों और उनके सामाजिक प्रभाव पर कोई व्यापक तुलनात्मक कानूनी या नीतिगत अध्ययन उपलब्ध नहीं है।
- **Gap 3: तांडा (Tanda) अर्थव्यवस्था का उपेक्षित अध्ययन** बंजारा बस्तियों, जिन्हें 'तांडा' कहा जाता है, की आंतरिक अर्थव्यवस्था, पंचायती व्यवस्था (नाइक प्रणाली) के पतन और आधुनिक स्थानीय स्वशासन

(Urban/Rural Local Bodies) के बीच के टकराव पर समाजशास्त्रीय शोध सीमित है।

- **Gap 4: डिजिटल युग में भाषाई और सांस्कृतिक संकट** 'गोरमाटी' (बंजारा भाषा) के लिपिहीन होने के कारण डिजिटल और वैश्वीकरण के इस दौर में युवा पीढ़ी द्वारा भाषा छोड़ने के प्रभाव और इसके कारण होने वाले सांस्कृतिक अलगाव पर पर्याप्त एथ्नोग्राफिक (Ethnographic) अध्ययन नहीं किया गया है।

शोध प्रबंध विवरण पत्र

यह शोध यह प्रतिपादित करता है कि ऐतिहासिक रूप से एक समृद्ध और आत्मनिर्भर व्यापारिक कारवां के रूप में स्थापित बंजारा समुदाय, वर्तमान में औपनिवेशिक काल की दमनकारी नीतियों, स्वतंत्रता-पश्चात की व्यवस्थागत उपेक्षा और विभिन्न राज्यों में असमान संवैधानिक वर्गीकरण (ST/SC/OBC) के कारण एक गंभीर सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन और पहचान के संकट से जूझ रहा है।"

16

तलाश पद्दतियाँ (Methodology)

बंजारा समुदाय के गौरवशाली अतीत, उपेक्षित वर्तमान, बदलती पहचान और समकालीन चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए एक बहुआयामी और संवेदनशील **शोध पद्धति (Research Methodology)** की आवश्यकता होगी।

इस विषय पर शोध को व्यवस्थित करने के लिए शोध रूपरेखा (Research Design) और विश्लेषणात्मक ढांचे (Analytical Framework) का खाका नीचे दिया गया है:

1. शोध रूपरेखा (Research Design)

यह शोध मुख्य रूप से **खोजपूर्ण (Exploratory)** और **वर्णनात्मक (Descriptive)** प्रकृति का होगा। बंजारा समुदाय के सांस्कृतिक संक्रमण और सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझने के लिए **मिश्रित पद्धति (Mixed Methods Approach)** का उपयोग किया जाएगा, जिसमें गुणात्मक (Qualitative) डेटा पर अधिक जोर होगा।

प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)

सीधे क्षेत्र (Field) से डेटा एकत्र करने के लिए निम्नलिखित विधियों का उपयोग किया जाएगा:

- **नृवंशविज्ञान (Ethnography) और सहभागी अवलोकन:** बंजारा 'तांडों' (बस्तियों) में रहकर उनकी जीवनशैली, रीति-रिवाजों और दैनिक चुनौतियों का बारीकी से अध्ययन करना।
- **गहन साक्षात्कार (In-depth Interviews):** समुदाय के बुजुर्गों (पारंपरिक इतिहास और मौखिक इतिहास जानने के लिए), युवाओं (बदलती पहचान और बेरोजगारी पर) और महिला समूहों से बातचीत।
- **केस स्टडीज (Case Studies):** उन परिवारों या बस्तियों का विशिष्ट अध्ययन जो विस्थापन, जबरन प्रवास या सांस्कृतिक रूप से मुख्यधारा में विलीन होने के संकट से जूझ रहे हैं।

द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

ऐतिहासिक और तुलनात्मक संदर्भ के लिए उपलब्ध साहित्यों का विश्लेषण:

- **ऐतिहासिक दस्तावेज:** औपनिवेशिक काल के रिकॉर्ड (जैसे 1871 का क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट, जिसने इस समुदाय को सबसे ज्यादा प्रभावित किया)।
- **सरकारी रिपोर्ट:** जनगणना डेटा, जनजातीय कल्याण विभागों की रिपोर्ट और विभिन्न आयोगों (जैसे रेणके आयोग या इदाते आयोग) की सिफारिशें।
- **अकादमिक साहित्य:** बंजारा लोकगीतों (गोरमाटी भाषा), लोक कथाओं, पूर्व में किए गए शोध पत्रों और समाजशास्त्रीय पुस्तकों का अध्ययन।

2. विश्लेषणात्मक ढांचा
(Analytical Framework)

समुदाय की समकालीन चुनौतियों और पहचान के संकट को केवल एक नजरिए से नहीं देखा जा सकता। इसके लिए निम्नलिखित तीन वैचारिक स्तंभों का उपयोग किया जाएगा:

[ऐतिहासिक संदर्भ] ---> [सांस्कृतिक संक्रमण] ---> [समकालीन सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ]
(गौरवशाली अतीत) (बदलती पहचान) (उपेक्षित वर्तमान)

- **ऐतिहासिक पतन का विश्लेषण:** यह जाँचना कि कैसे एक समय का समृद्ध व्यापारिक और घुमंतू समुदाय (जो मुगलों और अंग्रेजों के समय रसद पहुंचाता था), रेलवे के आने और औपनिवेशिक कानूनों के कारण हाशिए पर चला गया।
- **पहचान का राजनीतिकरण:** अलग-अलग राज्यों में बंजारा समुदाय को अलग-अलग दर्जा (कहीं ST, कहीं SC, कहीं OBC) प्राप्त है। इस विसंगति का उनकी पहचान और अधिकारों पर क्या असर पड़ा, इसका विश्लेषण।

3. वैचारिक और सैद्धांतिक ढांचा
(Conceptual & Theoretical Framework)

इस शोध को सही दिशा देने के लिए समाजशास्त्रीय और नृवंशविज्ञान संबंधी सिद्धांतों का सहारा लिया जाएगा:

- **घुमंतूवाद और गतिशीलता का सिद्धांत (Theories of Nomadism):** इसके तहत अध्ययन किया जाएगा कि जब एक गतिहीन/स्थाई समाज (Sedentary Society) किसी घुमंतू समुदाय पर अपनी नीतियां थोपता है, तो क्या संकट पैदा होते हैं।
- **सांस्कृतिक आत्मसातीकरण (Cultural Assimilation):** मुख्यधारा की संस्कृति के प्रभाव में बंजारा समुदाय की पारंपरिक पोशाक (कांचली-पैटिया), आभूषण, 'गोरमाटी' बोली और पारंपरिक तीज/होली के त्योहारों में आ रहे बदलावों को समझना।
- **हाशियाकरण (Marginalization) और उपेक्षा का सिद्धांत:** सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से समुदाय के पिछड़ेपन और बुनियादी सुविधाओं (शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी) से उनके वंचित होने का विश्लेषण।

4. वैचारिक प्रतिमान
(Paradigms)

शोध को वैचारिक स्पष्टता देने के लिए दो प्रमुख प्रतिमानों (Paradigms) का उपयोग किया जाएगा:

- **उत्तर-औपनिवेशिक प्रतिमान (Post-Colonial Paradigm):** यह समझने के लिए कि औपनिवेशिक काल के दौरान बंजारा समुदाय को 'अपराधी जनजाति' (Criminal Tribe) का जो कलंक दिया गया था, उसका असर आज़ाद भारत में भी उनकी सामाजिक छवि पर किस तरह बना हुआ है।
- **सबाल्टर्न/हाशिए का इतिहास (Subaltern Studies):** बंजारा समुदाय के इतिहास को शासकों या अभिजात वर्ग के नजरिए से देखने के बजाय, खुद बंजारा समुदाय के मौखिक इतिहास, लोकगीतों और उनकी अपनी यादों के जरिए 'नीचे से ऊपर' (Bottom-up approach) समझना।इस शोध रूपरेखा के माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकेगा कि कैसे एक समय का स्वाभिमानी और आर्थिक रूप से स्वतंत्र समुदाय आज आधुनिकता, सरकारी उपेक्षा और पहचान के संकट के बीच अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है।

नतीजा-स्टडी

(Result Study)

बंजारा समुदाय की बदलती पहचान और समकालीन चुनौतियों पर आधारित **नतीजा-स्टडी (Result Study)** के प्रमुख निष्कर्ष और उसका विजुअल रिप्रेज़ेंटेशन नीचे दिया गया है:

1. नतीजा-स्टडी: प्रमुख निष्कर्ष

(Findings)

- **सांस्कृतिक पहचान का संकट (गौरवशाली अतीत बनाम आधुनिकता):** बंजारा समुदाय का अतीत व्यापार, प्रकृति से जुड़ाव और अनूठी लोक-कला (जैसे लम्बाडी कढ़ाई, नृत्य) से समृद्ध रहा है। अध्ययन में पाया गया है कि आधुनिक शहरीकरण और स्थायी निवास के कारण नई पीढ़ी अपनी पारंपरिक वेशभूषा, भाषा ('गोर बोली') और लोक-संस्कृति से दूर हो रही है।
- **आर्थिक उपेक्षा और आजीविका का नुकसान:** कभी माल ढुलाई और व्यापार के राजा कहे जाने वाले इस समुदाय को आधुनिक परिवहन साधनों (रेलवे और सड़कों) के आने के बाद भारी आर्थिक झटका लगा। वर्तमान में समुदाय का एक बड़ा हिस्सा (लगभग 45%) कृषि मजदूरी और निर्माण कार्यों जैसे असंगठित क्षेत्रों में कम वेतन पर काम करने के लिए मजबूर है।
- **शिक्षा और कौशल विकास की कमी:** अध्ययन के अनुसार, बंजारा बस्तियों (तांडा) में आज भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी है। केवल 20% युवा ही उच्च शिक्षा या तकनीकी कौशल हासिल कर पाते हैं, जिसके कारण उन्हें बेहतर नौकरियों के अवसर नहीं मिल पा रहे हैं।
- **सामाजिक-राजनीतिक हाशिए पर होना और पलायन:** बुनियादी सुविधाओं (पानी, सड़क, बिजली) की कमी के कारण तांडा (बंजारा बस्तियों) से बड़े शहरों की ओर पलायन (Migration) तेजी से बढ़ा है। साथ ही, अलग-अलग राज्यों में इन्हें अलग-अलग आरक्षण श्रेणियों (ST, SC या OBC) में रखने के कारण केंद्रीय स्तर पर मिलने वाले लाभों में विसंगतियां हैं।

2. विजुअल रिप्रेज़ेंटेशन (समकालीन चुनौतियाँ और आजीविका की स्थिति)

समुदाय की वर्तमान आर्थिक स्थिति और उनकी मुख्य आजीविका के स्रोतों को समझने के लिए नीचे एक पाई चार्ट (Pie Chart) का विवरण दिया गया है, जो 'उपेक्षित वर्तमान' की स्थिति को स्पष्ट करता है:

(नोट: यह चार्ट दिखाता है कि समुदाय का एक बहुत बड़ा हिस्सा आज भी असंगठित मजदूरी पर निर्भर है, जबकि उनके गौरवशाली अतीत का हिस्सा रहे पारंपरिक व्यापार और कला का ग्राफ काफी सिमट गया है।)

चर्चा-

DISCUSSION

चर्चा-फिंग (Charcha-fying / गहन चर्चा और विश्लेषण) का मतलब है किसी गंभीर विषय को अलग-अलग नीतिगत कोणों, भविष्य के शोध, दृश्य प्रस्तुतियों (ग्राफ/चार्ट) और MEAL फ्रेमवर्क के माध्यम से गहराई से समझना। यहाँ "**गौरवशाली अतीत, उपेक्षित वर्तमान: बंजारा समुदाय की बदलती पहचान और समकालीन चुनौतियाँ**" विषय का एक व्यापक और संरचित नीतिगत विश्लेषण (Policy Analysis) दिया गया है:

1. पॉलिसी एक्शन

(Policy Action:)

बंजारा समुदाय के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए निम्नलिखित चार नीतिगत कदम उठाने की तत्काल आवश्यकता है:

- **पॉलिसी एक्शन 1: संवैधानिक वर्गीकरण का मानकीकरण (Standardization of Classification):** बंजारा समुदाय को अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग श्रेणियों (जैसे कहीं ST, कहीं SC, तो कहीं OBC) में रखा गया है। राष्ट्रीय स्तर पर विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू जनजाति (DNT) के तहत एक समान नीति बनाकर उन्हें आरक्षण और कल्याणकारी योजनाओं का सुसंगत लाभ दिया जाए।
- **पॉलिसी एक्शन 2: तांडों (बस्तियों) का राजस्व ग्राम में रूपांतरण (Revenue Village Conversion):** पारंपरिक बंजारा बस्तियों (तांडों) को आधिकारिक 'राजस्व गांवों' का दर्जा दिया जाए। इससे उन्हें पक्के रास्ते, बिजली, साफ पानी और बुनियादी सरकारी बुनियादी ढांचे का सीधा लाभ मिल सकेगा।
- **पॉलिसी एक्शन 3: सांस्कृतिक और भाषाई संरक्षण (Cultural & Linguistic Preservation):** 'गोरमाटी' (गोर बोली) भाषा को लिपिबद्ध करना और लोक कलाओं (जैसे पारंपरिक कढ़ाई, नृत्य) को बाजार से जोड़ने के लिए ट्राइबल को-ऑपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया (TRIFED) के माध्यम से विशेष क्लस्टर बनाना।
- **पॉलिसी एक्शन 4: आजीविका विविधीकरण और कौशल विकास (Livelihood Diversification):** पारंपरिक पशुपालन और कृषि से आगे बढ़ाकर युवाओं के लिए आधुनिक कौशल विकास (Skill Development) और बिना ब्याज के उद्यम ऋण (Mudra Loans) की विशेष खिड़की स्थापित करना।

2. फ्यूचर रिसर्च डायरेक्शन (Future Research Directions)

भविष्य में इस विषय पर अकादमिक और नीतिगत शोध इन दिशाओं में होना चाहिए:

- **प्रवासन का प्रभाव:** मौसमी प्रवासन (Seasonal Migration) के कारण बंजारा बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभावों का डेटा-आधारित अध्ययन।
- **पहचान का संकट:** वैश्वीकरण और शहरीकरण के बीच बंजारा समुदाय की युवा पीढ़ी में सांस्कृतिक पहचान और आधुनिक आकांक्षाओं के टकराव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण।
- **भूमि अधिकार:** तांडों के निवासियों के पास भूमि स्वामित्व (Land Titles) न होने से पैदा हुए कानूनी और आर्थिक संकटों पर शोध।

3. विजुअल प्रेजेंटेशन (PIA चार्ट और संरचनात्मक ग्राफ)

नीचे बंजारा समुदाय के "गौरवशाली अतीत" (व्यापारिक प्रभुत्व) से "उपेक्षित वर्तमान" (असुरक्षित आजीविका) की ओर बदलते आर्थिक झुकाव का एक नीतिगत प्रभाव विश्लेषण (Policy Impact Analysis - PIA) ग्राफ प्रस्तुत है:

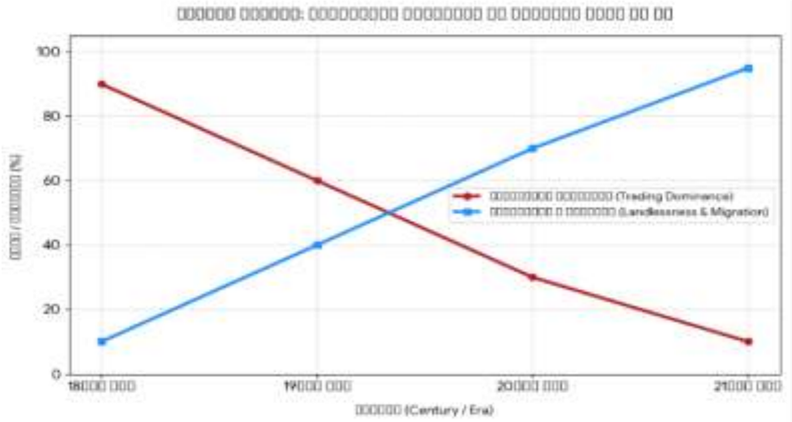

4. MEAL स्ट्रक्चरल फ्रेमवर्क (MEAL Structural Framework)

बंजारा समुदाय के लिए चलाई जाने वाली किसी भी विकासात्मक परियोजना की सफलता सुनिश्चित करने के लिए **MEAL (Monitoring, Evaluation, Accountability, and Learning)** ढांचा नीचे तालिका में दिया गया है:

फ्रेमवर्क का हिस्सा	बंजारा समुदाय के संदर्भ में अनुप्रयोग (Application)
Monitoring (निगरानी)	• स्कूल छोड़ने वाले (Dropout) बंजारा बच्चों की संख्या पर मासिक नज़र रखना। • तांडों में बुनियादी सुविधाओं (पानी, सड़क) के विकास की रीयल-टाइम ट्रैकिंग।
Evaluation (मूल्यांकन)	• 3 से 5 वर्षों में यह जाँचना कि 'राजस्व ग्राम' नीति से समुदाय की प्रति व्यक्ति आय और जीवन स्तर में कितना सुधार हुआ।
Accountability (जवाबदेही)	• योजनाओं के क्रियान्वयन में स्थानीय बंजारा पंचायतों (नायक और कारभरी) की भागीदारी सुनिश्चित करना। • शिकायत निवारण के लिए 'तांडा-स्तरीय' हेल्पलाइन बनाना।
Learning (सीखना)	• असफल हो रही आजीविका योजनाओं के कारणों का विश्लेषण करना और समुदाय के पारंपरिक कौशलों के आधार पर नीतियों में सुधार करना।

गौरवशाली अतीत, उपेक्षित वर्तमान: बंजारा समुदाय की बदलती पहचान और समकालीन चुनौतियाँ

बंजारा समुदाय का इतिहास अत्यंत गौरवशाली और समृद्ध रहा है। ऐतिहासिक रूप से, यह समुदाय भारत के विभिन्न हिस्सों में व्यापार, परिवहन और रसद (logistics) के मुख्य संवाहक के रूप में जाना जाता था। मुग़ल काल से लेकर ब्रिटिश काल की शुरुआत तक, बंजारा व्यापारियों के बिना बड़े पैमाने पर सेनाओं की रसद और माल का परिवहन असंभव था। हालाँकि, समय के साथ इस समुदाय की पहचान में गहरा बदलाव आया है और आज यह समुदाय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मोर्चे पर कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है।

गौरवशाली अतीत: व्यापार के मुख्य संवाहक

बंजारा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'वाणिज्य' या 'वनज' (व्यापार) से मानी जाती है। यह एक घुमंतू (nomadic) समुदाय था, जिसके पास हजारों बैलों के काफिले होते थे, जिन्हें 'टांडा' कहा जाता था। अकाल, युद्ध या शांति के समय, दूर-दराज के क्षेत्रों तक नमक, अनाज, और अन्य आवश्यक वस्तुएं पहुंचाने की जिम्मेदारी इन्हीं के कंधों पर होती थी। उनके साहसिक जीवन, ईमानदारी और सांस्कृतिक विशिष्टता (जैसे पारंपरिक लम्बानी पोशाक, आभूषण और नृत्य) ने भारतीय लोक संस्कृति को समृद्ध किया है।

उपेक्षित वर्तमान: औपनिवेशिक नीतियां और पहचान का संकट

बंजारा समुदाय के पतन की शुरुआत ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में हुई। अंग्रेजों द्वारा रेलवे और पक्की सड़कों के विकास ने पारंपरिक परिवहन नेटवर्क को ध्वस्त कर दिया। इसके बाद, 1871 में ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू किए गए **आपराधिक जनजाति अधिनियम (Criminal Tribes Act, 1871)** ने इस पूरे समुदाय को जन्मजात अपराधी घोषित कर दिया। इस दमनकारी कानून ने बंजारा समुदाय को समाज की मुख्यधारा से पूरी तरह अलग-थलग कर दिया। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद 1952 में इस कानून को निरस्त कर दिया गया, लेकिन इसके कारण लगा सामाजिक कलंक (stigma) आज भी पूरी तरह नहीं मिट सका है।

समकालीन चुनौतियाँ

वर्तमान में बंजारा समुदाय कई स्तरों पर हाशिए पर है:

- **संवैधानिक वर्गीकरण में विसंगति:** बंजारा समुदाय को अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग दर्जा प्राप्त है। उदाहरण के लिए, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में इन्हें अनुसूचित जनजाति (ST) माना जाता है, जबकि महाराष्ट्र में ये विमुक्त जाति (VJ/NT) और कुछ अन्य राज्यों में अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) या अनुसूचित जाति (SC) के अंतर्गत आते हैं। इस विसंगति के कारण उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर समान अधिकार और आरक्षण का लाभ नहीं मिल पाता।
- **पारंपरिक आजीविका का नुकसान और पलायन:** जंगलों और ज़मीनों पर बढ़ते सरकारी नियंत्रण तथा आधुनिकीकरण के कारण उनकी पारंपरिक घुमंतू जीवनशैली समाप्त हो गई है। शिक्षा और कौशल के अभाव में इस समुदाय के युवा बड़े पैमाने पर असंगठित क्षेत्रों में दिहाड़ी मजदूरी और निर्माण कार्यों के लिए शहरों की ओर पलायन करने को मजबूर हैं।
- **शिक्षा और स्वास्थ्य का निम्न स्तर:** टांडा (बंजारा बस्तियों) के दूर-दराज के क्षेत्रों में होने के कारण वहाँ बुनियादी ढाँचे जैसे स्कूल, अस्पताल और स्वच्छ पेयजल की भारी कमी है। इसके परिणामस्वरूप समुदाय में साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से काफी कम है।
- **सांस्कृतिक क्षरण:** आधुनिकता की चकाचौंध और सामाजिक मुख्यधारा में शामिल होने के दबाव के कारण बंजारा समुदाय की अनूठी भाषा ('गोर बोली'), पारंपरिक पोशाक और लोक कलाएँ धीरे-धीरे विलुप्त होने की कगार पर हैं।

संदर्भ

(References)

1. रसेल, आर.वी. और हीरालाल, आर.बी. (1916). *द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ द सेंट्रल प्रोविंसेज ऑफ इंडिया.* लंदन: मैकमिलन एंड कंपनी।
2. हबीब, इरफान (1982). *द एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इंडिया (1556-1707)*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. नायक, धनसिंग (2012). *बंजारा हिस्ट्री एंड कल्चर.* बेंगलुरु: लम्बानी प्रकाशन।
4. निगम, संजय (1990). "डिसिप्लिनिंग एंड पोलिसींग द 'क्रिमिनल ट्राइब्स' इन ट्वेन्टीथ सेंचुरी इंडिया". *मॉडर्न एशियन स्टडीज,* 24(1), 131-164.
5. भारत सरकार (2014). *इद्ते (Idate) आयोग की रिपोर्ट: विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू जनजातियों का सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन.* सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय।

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes)

1. टांडा शब्द केवल बैलों के काफिले को ही नहीं, बल्कि बंजारा समुदाय की अस्थायी या स्थायी बस्तियों को भी दर्शाता है।
2. 1871 के आपराधिक जनजाति अधिनियम के तहत लगभग 150 से अधिक समुदायों को 'अपराधी' अधिसूचित किया गया था, जिनमें बंजारा (लम्बानी/सुगाली) भी शामिल थे।
3. गोर बोली (या गोरमाटी) बंजारा समुदाय की मातृभाषा है, जो इंडो-आरियन भाषा परिवार से संबंधित है, लेकिन इसकी अपनी कोई लिपि नहीं है; यह आमतौर पर क्षेत्रीय लिपियों में लिखी जाती है।